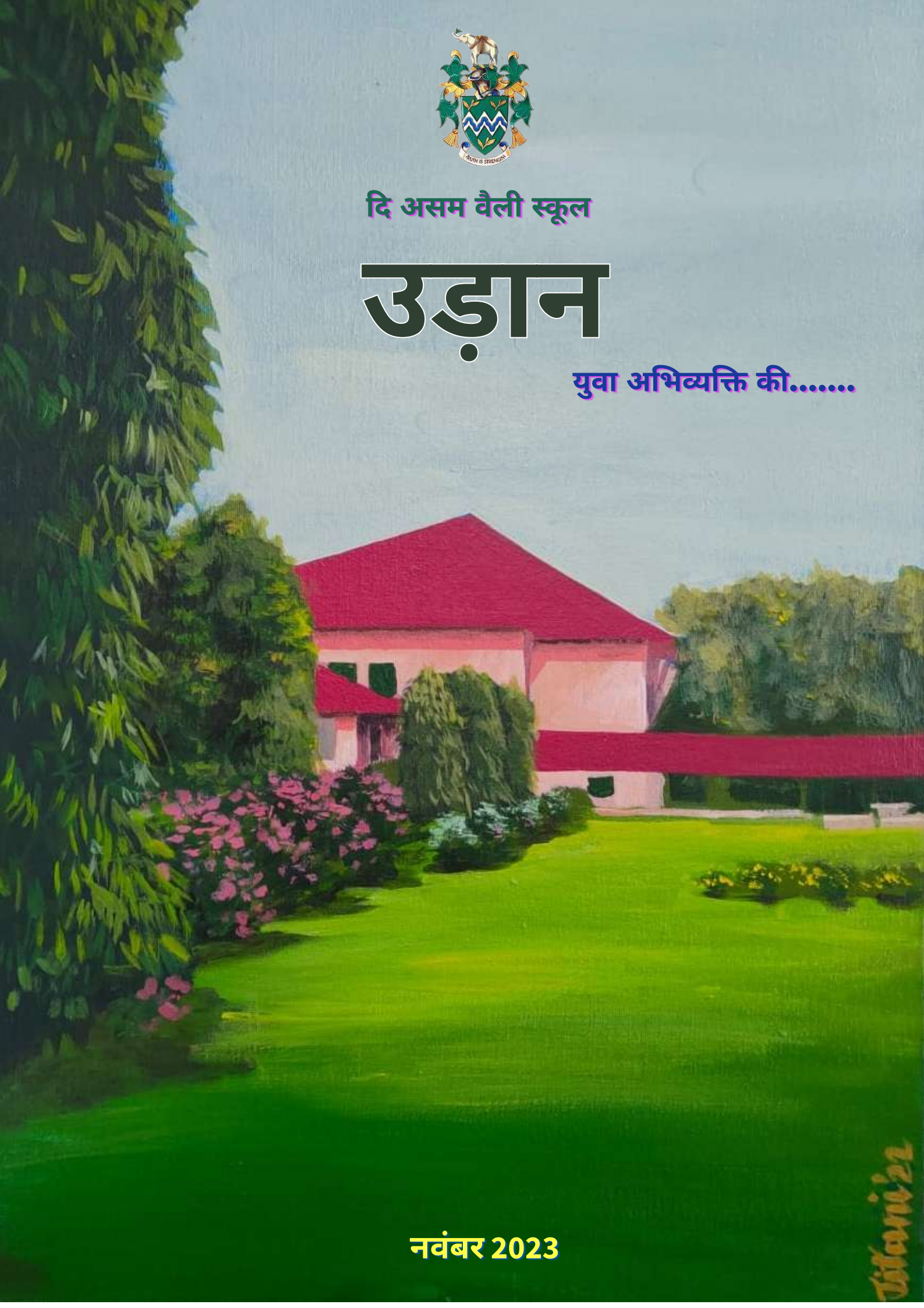

दि असम वैली स्कूल

उड़ान

युवा अभिव्यक्ति की.......

नवंबर 2023

दूरियाँ

क्या मीलों की दूरी हमें दूर रखती है या मीलों की दूरी, मन में दूरियाँ पैदा करती हैं ? कभी-कभी कोई गैर भी हमारे बहुत करीब हो जाता है जिसके बिना हम रह नहीं सकते परंतु कई बार कोई अपना सगा-संबंधी भी हमारे लिए गैर से भी अधिक दूर महसूस होता है। क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ लोग हमारे लिए इतने महत्त्वपूर्ण कैसे हैं? जब हम उदास होते हैं तो वे हमारे लिए थेरेपी के रूप में काम कर सकते हैं, उनकी उपस्थिति स्वचालित रूप से हमारे चेहरे पर मुस्कान ला सकती है और उनसे बात करके ही हम बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। जब हम उनके साथ होते हैं तो सब कुछ ठीक लगता है। हमारे जीवन में अच्छी यादें एक खूबसूरत गीत की तरह हैं, जिसमें हम हमेशा डूबे रहना चाहते हैं।

कभी-कभी, कोई ऐसा व्यक्ति होता है जो दूसरों के घर को भी अपने घर जैसा महसूस करता है। क्या यह अजीब नहीं है कि एक व्यक्ति आपके लिए इतना महत्त्वपूर्ण हो सकता है कि अगर वह हो तो आपको किसी और की कोई ज़रूरत ही नहीं है। यह कोई भी हो सकता है जिससे आप प्यार करते हैं। लेकिन प्यार वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं। बहुत से लोग बस एक-दूसरे को हल्के में लेते हैं। इस दुनिया में कुछ भी एकतरफा नहीं हो सकता, कोई दोस्ती नहीं, कोई रिश्ता नहीं। दोस्ती जैसे बंधन को जारी रखने के लिए दोनों मित्रों की ओर से प्रयासों की आवश्यकता होती है।

दूरियाँ हमें और अधिक प्यार करने का कारण देती हैं लेकिन कभी-कभी चीजें हमारे हाथ से फिसल जाती हैं। हम सभी अपने-अपने स्तर पर किसी न किसी चीज़ से निपट रहे हैं। कभी-कभी लोग दूरी के कारण सही व्यक्ति को खो देते हैं। दूरियाँ दिलों को और अधिक स्नेहपूर्ण बनाती हैं, दूरियाँ हमेशा रहेंगी लेकिन यह तय करना आपकी पसंद है कि यह सार्थक है या नहीं।

आरुषि मित्तल
कक्षा- ग्यारहवीं

जीवन का उद्देश्य

यह सर्वविदित तथ्य है कि बिना लक्ष्य वाला व्यक्ति जीवनहीन व्यक्ति होता है। इस ब्रह्माण्ड में सभी प्राणियों का कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य है। यह सभी चीजों के लिए सामान्य है, चूँकि मनुष्य उन सभी में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, इसलिए उसे यह चुनने का अधिकार दिया गया है कि वह अपने जीवन में क्या करना चाहता है। हर व्यक्ति की मानसिकता अपने-अपने प्रकार की होती है। इसलिए उसके जीवन का लक्ष्य भी दूसरों से अलग होगा।

जीवन ईश्वर का सबसे बड़ा आशीर्वाद है; फिर भी, यदि कोई उद्देश्य नहीं है, तो जीवन बेकार और निरर्थक है। हममें से हर कोई एक मिशन के साथ पैदा हुआ है। जीवन में लक्ष्य का होना जरूरी है। यदि आप अपने जीवन में कुछ करना चाहते हैं, तो आपके पास एक लक्ष्य होना चाहिए। छात्र जीवन लक्ष्य निर्धारित करने का आदर्श समय है। एक परिभाषित उद्देश्य वाला व्यक्ति उस व्यक्ति से बेहतर प्रदर्शन करता है जिसके पास जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है और यदि आप नहीं जानते कि आप क्या चाहते हैं, तो आप कभी भी कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित नहीं होंगे। एक अच्छा जीवन जीने और चुनौतियों से निपटने के लिए हमें एक उचित योजना की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप, हर किसी के लिए एक जीवन लक्ष्य रखना महत्त्वपूर्ण है।

अलग-अलग लोगों के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं। कुछ लोग डॉक्टर बनना चाहते होंगे जबकि कुछ लोग अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहते होंगे। इसी तरह अगर इंजीनियरिंग कुछ लोगों को आकर्षित करती है, तो सेना दूसरों के लिए आकर्षण हो सकती है। कुछ का लक्ष्य जीवन में शिक्षक बनना होता है जबकि दूसरों को समाज सेवा या राजनीति रास आती है इसलिए अलग-अलग लोग अपनी रुचि या जीवन के बारे में धारणा के अनुसार अलग-अलग लक्ष्य अपनाते हैं।

यह माता-पिता और शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार पेशा चुनने के लिए प्रेरित करें। इस प्रकार कोई कह सकता है कि सही लक्ष्य का अर्थ है सही जीवन और गलत लक्ष्य का अर्थ है गलत जीवन। इसलिए, हमें अपना लक्ष्य तय करते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए।

इस प्रकार यह सत्य है कि एक सफल जीवन के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना और उसे प्राप्त करने के लिए कार्य करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हर किसी को इस दिशा में काम करना शुरू कर देना चाहिए। किसी कार्य योजना का सक्रिय दृष्टिकोण के साथ समय पर क्रियान्वयन ही सफलता की कुंजी है। प्रेरित रहने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है बदलाव की कल्पना करना और साथ ही चरण दर चरण उपलब्धियाँ हासिल करना।

संसिता जिंदल
कक्षा- दसवीं

कोविड-19 का दुष्प्रभाव

कोविड 19 ने न केवल वयस्कों को प्रभावित किया है, बल्कि युवाओं को भी हद तक प्रभावित किया है। युवाओं को शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन आदि में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। मैं जब हर पहलू पर विचार करती हूँ, तो पाती हूँ कि कोविड 19 ने सबसे अधिक युवाओं को प्रभावित किया है। हम सभी युवा लगभग दो वर्षों तक अपने-अपने घरों में बंद रहे। हमारा किताबों, रिश्तेदारों दोस्तों और बाहरी गतिविधियों से संपर्क टूट गया।

कोरोना के समय हमने केवल फोन पर गेम खेला, फिल्में देखीं, यहाँ तक कि हमने अपनी कक्षाएँ भी फोन पर ही कीं। कोविड 19 की महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा गहरा प्रभाव डाला था। इस महामारी के दौरान छात्रों को ऑनलाइन कक्षाएँ करनी पड़ीं जिससे उनकी सीखने और समझने की क्षमता कम हो गई।

सामाजिक रूप से युवा पीढ़ी को उन दिनों संवाद में कठिनाई महसूस हुई। हम सभी अपने दोस्तों से मिल नहीं पा रहे थे। धीरे-धीरे उनसे लगाव ही छूट गया। वर्तमान में युवा पीढ़ी को कोविड के प्रभाव से निकलने के लिए सक्रिय रहने के साथ-साथ सकारात्मक मानसिकता को रखने की जरूरत है। उन्हें नये रूप से अपनी संचित ऊर्जा का प्रयोग करते हुए अपने कैरियर को आगे बढ़ाना चाहिए। आज जब् हम अपने आपको देखते हैं तो यही लगता है कि जैसे अभी तक हमारी मानसिकता कोरोना वायरस के चंगुल में ही फँसी हुई है। आज भी हमें कोई बड़ी चुनौती लेते हुए डर लगता है।

विद्यालय में आने के बाद काफी हद तक हम उस अवसाद से निकल चुके हैं लेकिन अभी एक लम्बा समय लगेगा जब हम पूरी तरह से पहले की तरह वैचारिक जंग लड़ने के लिए तैयार हो पाएँगे। हमारे शिक्षक और अभिभावक अपने पूरे प्रयासों से हम युवाओं को भविष्य में आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार कर रहे हैं परंतु हम विद्यार्थियों को भी उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।

सृष्टि बैद
कक्षा- आठवीं

भ्रष्टाचार

आजकल यह देखकर बहुत डर लगता है कि आज की दुनिया कैसी हो गई है। हर व्यक्ति दूसरे के हक को छीनना चाहता है। गरीब आदमी का हक मारा जा रहा है। गरीबों को वह नहीं मिलता जिसके वे हकदार हैं और अमीरों को वह भी मिल जाता है जिसके वे हकदार नहीं हैं। इसका मूल कारण भ्रष्टाचार है। सत्ता में बैठे लोग उस धन को चुरा लेते हैं। वे सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं और अपने परिवार और प्रियजनों का ही हित करते हैं। जनता, कर के माध्यम से धन, देश के विकास के लिए देती है। उस धन का प्रयोग सरकारें भ्रष्टाचार में करती हैं। अमीर लोग गरीबों की मदद नहीं करते केवल अपना पेट भरने में लगे रहते हैं।

आजकल लोग इतने लालची हो गए हैं कि धन के लिए वे किसी की भी जान ले सकते हैं। अपनी खुशी के लिए इंसान, दूसरों की खुशियाँ भी छीन लेता है। जैसे असम में ही देख लीजिए, पैसों के लिए लोग एक सींग वाले गेंडे को भी मार देते हैं। कई बार इस तरह की घटनाओं में सरकारी कर्मचारी भी सम्मलित रहते हैं। बाद में शिकारी उनका हिस्सा पहुँचा देते हैं। मनुष्य सिर्फ़ अपनी खुशी के लिए जानवरों को भी मारने में पीछे नहीं हटता।

आज हमारे देश को आज़ाद हुए 70 साल से अधिक हो गए हैं और फिर भी हम गरीब देश की श्रेणी में आते हैं। यदि सरकारें और ज़िम्मेदार पदाधिकारी ईमानदार होते तो देश प्रगति के मार्ग पर बहुत पहले बढ़ गया होता। आज सबसे अधिक ज़रूरत है कि हम सभी अपने-अपने क्षेत्रों में ईमानदारी से कार्य करें तो देश की हर समस्या का समाधान हो जाएगा।

लोग भ्रष्टाचार का गलत मतलब निकाल लेते हैं। भ्रष्टाचार केवल पैसों को ही डकार जाना नहीं है बल्कि मेरी नज़र में अगर हम अपने काम को ईमानदारी से नहीं करते हैं तो वह भी भ्रष्टाचार ही है। विद्यार्थी भी अगर अपना काम ईमानदारी से न करके दूसरों को धोखा देकर पूरा करते हैं तो वह भी भ्रष्टाचार ही होगा क्योंकि भ्रष्टाचार का सही अर्थ भ्रष्ट आचरण ही होता है। यदि हम सब इस सच्चाई को समझ लें तो शायद काफी हद तक हम खुद भ्रष्टाचार से दूर रह सकेंगे और भ्रष्टाचारियों को भी सही रास्ता दिखा सकेंगे।

अश्विका महंता
कक्षा- सातवीं

सोने की चिड़िया

भारत, एक शब्द, अक्षर तीन,
और करोड़ों कहानियाँ हैं।
यह वही सिंधु घाटी ही धरती है,
यह वही कुरुक्षेत्र की भूमि भी।
यह वीर अशोक की जननी है,
अब्दुल कलाम की अम्मी भी।

भारत आज विश्व पटल पर सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन चुका है परंतु भारत की जनसंख्या इसके लिए अभिशाप न होकर एक वरदान के रूप में सिद्ध हो रही है। इसका कारण यह है कि भारत में सर्वाधिक आबादी युवाओं की है जो अपार ऊर्जा एवं नवाचारों से परिपूर्ण हैं। यदि भारतीय मानचित्र को देखा जाए तो यह एक विशाल पक्षी की भाँति नज़र आता है। यह पक्षी एक ऐसी उड़ान के लिए अपने पंख फैला चुका है, जो आसमान की ऊँचाइयों को भी मात देने की सोच रहा है। इस भारत रूपी पक्षी के पंख इतने विशाल हैं कि यह भुज के भुजबंधन दरकाने से लेकर अरुणाचल के तवांग को बाँधे रखने की भी क्षमता रखता है। इसके मुख में कश्मीर के मीठे सेबों का स्वाद और पृष्ठभाग की तरफ कन्याकुमारी में विवेकानंद घाट का असीम दिव्यानंद है।

इस पक्षी के विशाल नेत्र राजस्थान की लाख की चूड़ियों की तरह गोल हैं जिन्हें एक तरफ घुमाओ तो अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की स्वर्णिम झलक दिखाई देती है और दूसरी तरफ घूमने पर असम की चाय के लहलहाते हरे-भरे बागान के दर्शन हो जाते हैं। इस पक्षी के पैर कभी आंध्रप्रदेश के कुचीपुड़ी में तो कभी केरल के कथकली पर ऐसे थिरकते हैं जो दर्शकों के मन से साल्सा और ज़ैज की पहचान ही मिटा कर रख देते हैं। इसके दिल में वह दिल्ली बसती है जिसमें भगत सिंह की धड़कन आज भी लालकिले पर लहराते तिरंगे के रूप में परिलक्षित होती है। इस पक्षी के उदर में जहाँ असंख्य लोगों के भरण-पोषण की असीम क्षमता है, वहीं दूसरी ओर बौद्धिक प्रखरता को संवर्धित करने वाली नालंदा की अकूत दौलत है। यहाँ पर मानसिक और आध्यात्मिक क्षुधा को शांत करने वाली बनारस, प्रयागराज, अयोध्या एवं बृजमंडल जैसी पवित्र धरा है जो आज भी जनमानस को भक्ति रस में डुबोने की अपार क्षमता रखती है।

भारत वैदिक युग से हमेशा ही संसार को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर अग्रसित करने के लिए प्रेरित करता रहा है। वैदिक कालीन भारतीय संस्कृति में नारियों का स्थान सदैव ही सम्माननीय रहा है। कहा भी गया है, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।" जिसका अर्थ है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल में परिवार के मध्य मातृ सत्तात्मक व्यवस्था मौजूद थी परंतु धीरे-धीरे समय की करवट के साथ यह पितृ सत्तात्मक हो गई। ऋग्वेद काल में स्त्रियाँ सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं। अर्धनारीश्वर की कल्पना इस बात का प्रमाण थी कि यहाँ नारी और पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त थे। सावित्री, अपाला, गार्गी तथा देवयानी जैसी अनेक विदुषी महिलाओं के नाम वेदों में वर्णित हैं जिन्होंने अपने ज्ञान एवं अध्यात्म से संपूर्ण संसार को चमत्कृत किया था। देवमाता अदिति चारों वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं।

प्राचीन समय में महिलाएँ भी पुरुषों के साथ शास्त्रार्थ करने में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाती थीं परंतु समय के झंझावातों ने और बाह्य आक्रमणकारियों के आधिपत्य ने भारतीय संस्कृति को काफी हद तक प्रभावित किया था। लेकिन समय चक्र ने एक बार पुनः करवट ली है और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज की संरचना और संस्कृति एक बार फिर अपने उन्नयन की ओर गतिमान हो चली है। आधुनिक काल में इंदिरा गांधी, महादेवी वर्मा, अरुन्धती रॉय, कल्पना चावला, मैरी कॉम एवं द्रौपदी मुर्मू जैसी तेजस्विनी महिलाओं ने भारतीय संस्कृति के परचम को विश्व पटल पर एक विशिष्ट पहचान दिलाई है।

सांस्कृतिक विविधता को इस पक्षी के विविधवर्णी पंखों के समान माना जा सकता है। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक आर्यावर्त से लेकर भारत तक इस देश ने विविध भाषाओं, विविध वेशभूषाओं, विविध खान-पान और विविध आचार-विचारों को अपनी सम्मिलित शक्ति के रूप में परिपुष्ट किया है। जगद्गुरु कहलाने वाला यह स्वर्णिम राष्ट्र एक बार पुनः वसुधैव कुटुम्बकम् के मार्ग पर चलकर विश्व का पथ-प्रदर्शन करने के लिए कटिबद्ध है।

पहल बजाज
कक्षा- नवमीं

दोस्ती

श्रेया अग्रवाल
कक्षा - सातवीं

दोस्ती एक अजब-सी पहेली है,
इसे कुछ लोग ही सुलझा पाते हैं।
करते हैं बहुत से लोग इसे जीवन में,
मगर कुछ-कुछ ही इसे निभा पाते हैं।

खुशी का सच्चा अहसास इसी से है,
मन में शांति का आभास इसी से है।
सच्चा दोस्त अगर चले साथ में अपने,
तो जीवन जीने का विश्वास इसी में है।

दोस्ती करना तो सभी चाहते हैं,
निभाना किसी-किसी को आता है।
मुसीबत में साथ रहने वाले कम हैं,
बहाना बनाना तो बहुतों को आता है।

दोस्ती ही जीवन में ठहराव लाती है,
दोस्ती ही जीवन में उबाल लाती है।
दोस्त अगर साथ दे जाए मुसीबत में,
हर मुश्किल हमारी मंज़िल बन जाती है।

अनोखी सोच

आरुषि मित्तल
कक्षा - ग्यारहवीं

किसी दूर स्थान तक जाना,
मुझे स्वर्ग जैसा लगता है।
ऊपर से नीचे की ओर गिरना,
किसी नर्क से कम नहीं था।

मेरे पंख थक चुके थे,
मुझे निरर्थक लगते थे।
लेकिन पंखों के सहारे ही,
लोग ऊँची उड़ान भरते हैं।

मेरा मन हमेशा से ही दोषी है,
अनंत की तलाश में खानाबदोशी है।
दिल से हमेशा हिम्मत जुटाती हूँ,
अपनी मंज़िल पाने को दौड़ती जाती हूँ।

जन्म से लेकर अब तक हमेशा,
बस यही सोचती रहती हूँ।
दुनिया पर कैसे राज करूँगी मैं,
इसका रास्ता खोजती हूँ मैं।

भूल जाती हूँ सबसे साथ मिलकर,
हर मंज़िल को पा सकती हूँ मैं।
पता नहीं क्यों अकेले रहकर ही,
सच्चा साथी तलाशती हूँ मैं।

बारिश

कृष्णम् अग्रवाल
कक्षा - आठवीं

खुशियों की सौगात लाई,
बारिश आई, बारिश आई।
आसमान में बादल छाए
तेज हवा भी शोर मचाए,
बिजली चमके, बादल गरजे
धरती भी पानी को तरसे।
बागों में झूमें सब मिलकर
खेतों में गाते हैं हलधर,
मोर नाचते पड़ें दिखाई
चारों ओर खुशहाली छाई।
बच्चे करते खूब शैतानी
धरती ओढ़े चूनर धानी,
तालों में जल खूब भरेगा
जल से हर जीवन चहकेगा।
बारिश का मौसम है आया
हर दिल में है प्रेम समाया,
बारिश सबकी प्यास बुझाती
कोयल मीठे गीत सुनाती।

पापा की जींस

अर्पित यादव
कक्षा - पाँचवीं

पापा ने जब जींस पहनकर
हम सबको दिखलाई,
पहन जींस बाहर जाने में
उन्होंने अरुचि दिखाई।

हम सब उनको लगे बताने
अच्छी उन पर लगती है,
वह बोले तुम सब चुप बैठो
मुझको झंझट लगती है।

बड़ी झिझक के बाद उन्होंने
एक अच्छी शर्ट निकाली,
नीली जींस पहनकर उस पर
व्हाइट टी-शर्ट डाली।

मिले मित्र से जब वे बाहर
उनसे जाकर बोले,
आज मेरे घरवालों ने बस
बदल दिए मेरे चोले।

कहो, तुम्हें कैसा लगता है
यह परिधान हमारा,
वे बोले तुम चलो समय संग
मानो कहा हमारा।

कोई परिधान बदल लेने से
आदत बदल न जाती,
नित्य-नियत, संयत रहना ही
सबसे बढ़कर थाती।

हँसना मना है !!

चिंटू- तुम्हारी बेटी की सगाई को पूरे 2 साल हो गये हैं,
विवाह में इतनी देरी क्यों?
पिंटू- दरअसल, लड़का एक वकील है,
जैसे ही विवाह की तारीख पास आती है,
वह कोई ना कोई बहाना करके तारीख आगे बढ़ा देता है।

पति ने ऑफिस में बैठे-बैठे फेसबुक पर पोस्ट
किया-पंछी बनू उड़ता फिरूँ मस्त गगन में...
तभी वाइफ का कमेंट आया..
धरती छूते ही सब्जी ले आना अपने भवन में...

रास्ता खोजिए

नीचे दिखाए गए अंतरिक्ष यात्री को रॉकेट तक पहुँचने का रास्ता खोजने में उसकी मदद कीजिए।

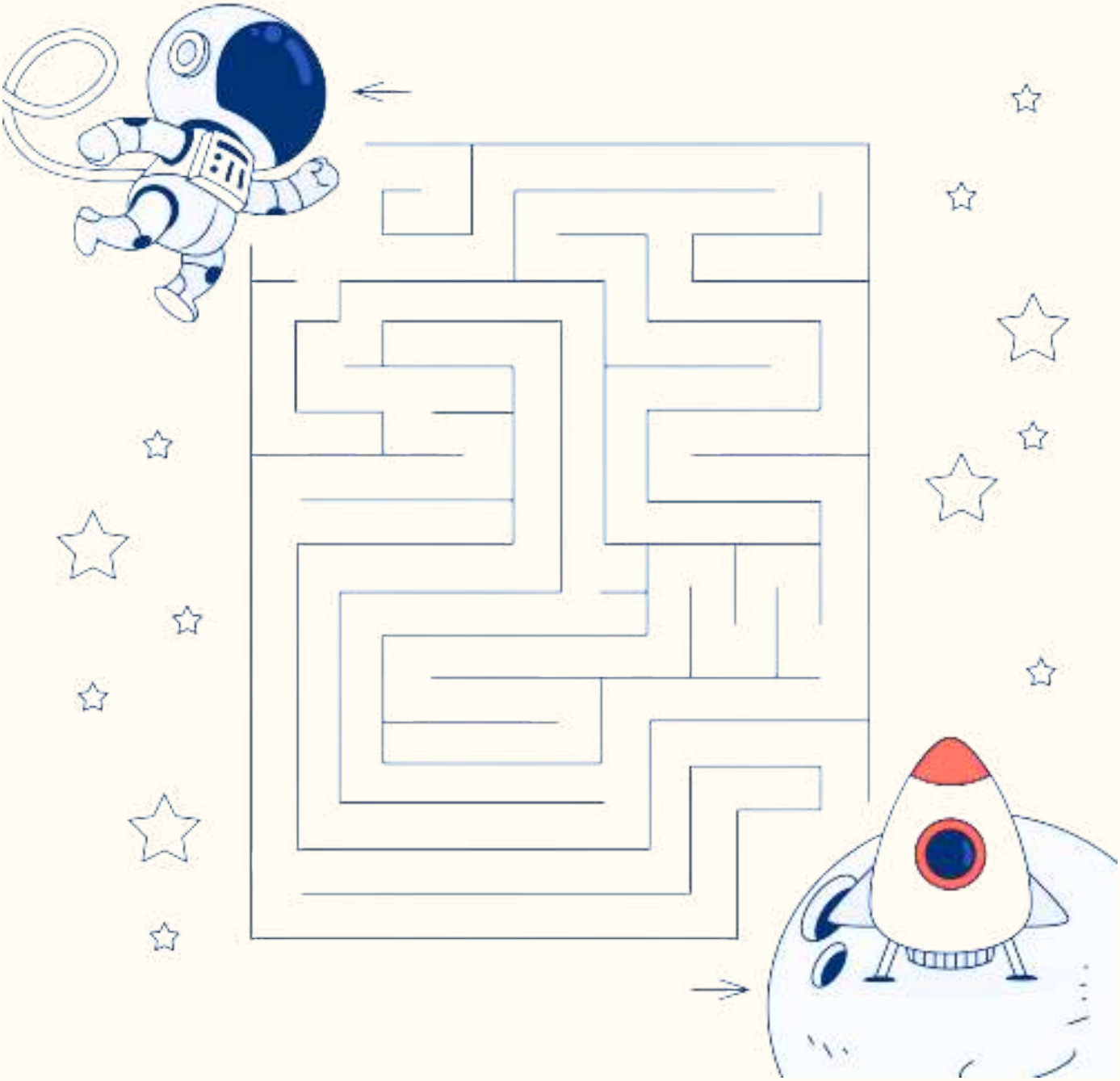

-साभार गूगल
संचित अग्रवाल
कक्षा - ग्यारहवीं

रचनात्मक कौशल

वर्ग पहेली में से भाषाओं के नाम ढूँढ़कर सही राज्य के सामने लिखिए :

राज्य	भाषा
क. केरल	.....
ख. कर्नाटक	.....
ग. पंजाब	.....
घ. उत्तर प्रदेश	.....
ङ. तमिलनाडु	.....
च. आंध्रप्रदेश	.....
छ. उड़ीसा	.....
ज. कश्मीर	.....

क	पं	हिं	दी	म
न्न	जा	त	मि	ल
ड़	बी	उ	ड़ि	या
ते	लु	गू	ट	ल
क	श्	मी	री	म

संपादकीय मण्डल

मुख्य संपादक	: हिया केशन
सहायक संपादिका	: अवन्या जसरासरिया
आवरण पृष्ठ सज्जा	: अनुष्का जितानी
संकलनकर्ता	: संचित अग्रवाल
प्रभारी शिक्षक	: डॉ. राजेश कुमार मिश्र
सहायक शिक्षक	: श्रीमान संजय कुमार दीक्षित
	: श्रीमान प्रेम कुमार सिंह
	: श्रीमान अनिल कुमार यादव
	: श्रीमती मनदीप कौर
मार्ग-दर्शक	: डॉ. अमित जुगरान

निज भाषा उन्नति अहै , सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।।